International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(IV), April - June, 2021, pp.157-162

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना महामारी का प्रभाव एवं चुनौतियॉ

लखन लाल चौकसे*

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कोरोना महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव एवं चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। कोविड–19 के कारण वर्तमान वैश्विक संकट समकालीन इतिहास में अपने तरीके का पहला संकट हैं। इस वैश्विक संकट के परिणाम धीरे–धीरे सामने आ रहे हैं जिससे भारी संख्या में मौते, बेरोजगारी में वृद्धि, विश्व अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में तेजी से आ रही गिरावट मंदी का लंबा दौर आदि शामिल है। ये सब विश्व अर्थव्यवस्था को अनिश्चितता की स्थिति में ले जा रहे हैं, जहां से संकट–पूर्व के स्तर पर लौटने में वर्षों लगेगें।

कुंजीशब्दः *कोविड–19, अर्थव्यवस्था, महामारी, प्रभाव एवं चुनौतियां।*

प्रस्तावना

कोविड–19 एक ऐसी महामारी जिसने विश्व अर्थव्यवस्था को बरबादी के दल–दल में धकेल दिया है। विश्व के 212 से अधिक देशों में 41 लाख से अधिक जनसंख्या को संक्रमित तथा 2.8 लाख से अधिक जनसंख्या को मृत्यु की चपेट में लेने वाले कोविड–19 ने पूरी मानव जाति को लॉकडाउन कर उनकी उत्पादन, उपभोग, व्यापार उनकी उत्पादन, उपभोग, व्यापार, रोजगार, जीवन शैली एवं अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। 600 लाख हजार डॉलर की आर्थिक हानि के अनुमानों के साथ 2.8 लाख से अधिक की जन–हानि संपूर्ण संसार के लिए एक भीषणतम चुनौती है।

वास्तव में दुनिया की अर्थव्यवस्था अभी ICU में है। कोविड–19 से विश्व की GDP 20 प्रतिशत गिर जाने का अनुमान है जबकि विश्व महामंदी 1929–30 के समय GDP 15 प्रतिशत कम हुई थी अर्थात विश्व को उससे भी खतरनाक स्थिति का सामना करना पर सकता है। यह महामारी दुनिया को और 20 प्रतिशत गरीब बनाकर जायेगी। यूनाइटेड नेशन ने अनुमान लगाया है की अगले दो वर्षों में कोविड–19 महामारी के कारण विश्व अर्थव्यवस्थाा को 8 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होगा। ऐसी संकट की स्थिति में इस महामारी का वैश्विक परिदृश्य में भारतीय ^लियन डॉलर का नुकसान होगा। ऐसी संकट की स्थिति में इस महामारी का वैश्विक परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करना तथा वर्तमान में भारतीय अर्थव्यव्स्था किन चुनौतियों का सामना कर रही है और उनका क्या समाधान होगा यह अध्ययन करना आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोरोना महामारी का विश्व अर्थव्यवस्था एवं भारतीय पर प्रभाव का अध्ययन करना, सकल घरेलु उत्पाद, आय, आयात–निर्यात, मांग एवं पूर्ति की असमानता एवं अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव का अध्ययन करना, इससे उत्पन्न समस्याओं, संकटों एवं चुनौतियों का पता लगाना तथा समाधान एवं निष्कर्ष प्रस्तुत करना है।

[6] शोधार्थी वाणिज्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.।

परिकल्पना

- कोरोना महामारी का अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पडेगा।
- बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं जिसमें समग्र रूप से अध्ययन क्षेत्र भारत लिया गया है। विश्लेषण, व्याख्या एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि द्वार उद्देश्यों का अध्ययन का निष्कर्ष निकाले गयें हैं। सांख्यिकीय रीतियों में औसत, प्रतिशत एवं रेखा चित्रों का प्रयोग किया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था–विकास का उभरता वैश्विक परिदृश्य और कोरोना कहर

विश्व की 17.5 प्रतिशत जनसंख्या एंव 2.4 प्रतिशत भू–क्षेत्रफल रखने वाले भारत के संदर्भ में पिछले दशक की सबसे बडी घटना इसका वैश्विक परिदृश्य उभरना है। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरे सबसे बडी तथा चीन के बाद दूसरी आर्थिक वृद्धि वाली अर्थव्यवस्था हैं। सोने की चिड़ियाँ कहाँ जाने वाला भारत 300 वर्ष तक गुलामी की जंजीरो में जकड़ा रहा तथा स्वतन्त्रता के समय आर्थिक रूप से जर्जर एवं कमजोर था। नियोजित आर्थिक विकास के माध्यम से लोकतान्त्रिक समाजवादी समाज की स्थापना एंव संरक्षित विकास का उद्धेश्य लेकर भारत निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर होता रहा। 1991 के आर्थिक सुधारो, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप एंव दिशा को बदल दिया। उप्पादन तकनीक, विदेशी पूंजी, उद्योगो का निजीकरण, उदार मुद्रा नीति, लायसेंस प्रणाली की समाप्ति, खूला आयात–निर्यात, रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता, इत्यादि ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तेजी से विकसित किया। आधारभूत संरचना का विकास, बैंक, बीमा, यातायात, ऊर्जा, संचार, सूचना प्रौधोगिकी, शोध, अनुसंधान, आविष्कार ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया। आज जबकि उत्पाद, बचत, विनियोग, पूंजी निर्माण, कृषि उत्पादन, औधोगिक उत्पादन, निर्यात इत्यादि में वृद्धि कर भारत विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा था तथा 2019 में 3.2 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था तथा 422 विलियन डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार के साथ सशक्त हो रहा था कि अचानक कोरोना कहर ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर दिया और उसे एक ओर महामंदी की और धकेल दिया है।

कोविड–19 के पूर्व एवं पश्चात् विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सकल घरेलु उत्पाद स्थिति

कोरोना महामारी का सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था एवं उसके घरेलु उत्पाद पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका 1 विश्व के प्रमुख देशों की GDP वृद्धि दर कोविड–19 के पूर्व एवं पश्चात् की तुलनात्मक स्थिति को दर्शाती है।

तालिका 1: विश्व के प्रमुख देशों की GDP वृद्धि दर कोविड–19 के पूर्व एवं पश्चात् की तुलनात्मक स्थिति

		कोविड–19 के पूर्व		कोविड–19 के पश्चात् (आनुमानित)	
क्र.स.	विश्व एवं देश	वर्ष 2018	वर्ष 2019	वर्ष 2020	वर्ष 2021
1.	विश्व	3.6	3.01	0.1	0.2
2.	टर्मेरिका	2.9	2.4	–5.9	4.7
3.	यूरोपीय संघ	2.2	1.5	–7.4	6.1
4.	ब्रिटेन	1.4	1.2	–8.3	6
5.	जर्मनी	1.5	0.5	–6.5	5.9
6.	जपान	0.8	0.9	–5.9	3.0
7.	रूस	2.3	1.1	–6.0	1.0
8.	भारत	6.8	6.1	1.9	7.4
9.	चैन	6.6	6.1	1.2	9.2

स्त्रोतः आईएमएफ, वर्ल्ड इकानामिक आउटलुक डाटाबेस अक्टूबर 2019, अप्रैल 2020, Zee News DNA 17/04/2020

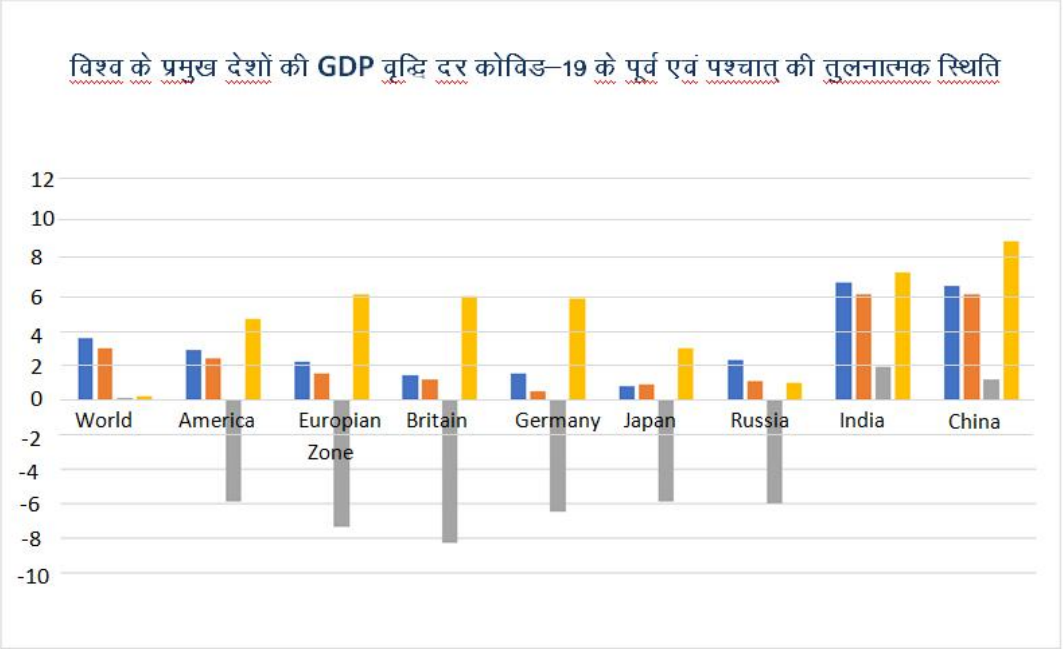

तालिका 1 से स्पष्ट है कि विश्व की अर्थव्यवस्थाऐं जो कोविड–19 के पूर्व जिस दर से व्रद्धि कर रही थी कोविड–19 के पश्चात उनकी व्रद्धि दर तेजी से ऋणात्मक हो रही है। मुख्य रूप से अम्रीका, यूरोप, जर्मनी, जापान एवं रूस जैसी विकसित अर्थव्यवस्था को कोरोना कहर ने तहस–नहस कर दिया है। यहाँ जन धन की हानि के साथ लोकडाउन ने अर्थव्यवस्था की प्रगति के पथ को लॉक कर दिया है।भारत एवं चीन की स्थिति यह है कि कोरोना कहर एवं लोकडाउन से अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर अचानक तेजी से कम हुई है जहाँ 2019 में भारत की वृद्धि दर 6.1 प्रतिशत थी वह कोविड–19 के पश्चात 2020 में 1.9 प्रतिशत अनुमानित की गयी है। वही चीन की 2019 में जीडीपी वृद्धि दर 6.1 प्रतिशत थी वह 2020 में घटकर 1.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। विश्व में आर्थिक रूप से सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका की वृद्धि दर 2019 में 2.4 प्रतिशत थी वह घटकर –5.9 प्रतिशत रहने का अनुमान है सम्पूर्ण विश्व की 2019 की औसत वृद्धि दर 3 प्रतिशत थी वह 2020 में 0.1 प्रतिशत रहने की सम्भावना है।

स्पष्ट है कि कोरोना महामारी ने विश्व अर्थव्यवस्था की मंदी के दल–दल में धकेल दिया है। जनसंख्या की सस्वस्थ हाति तो महत्वपूर्ण है ही उनकी जीवन शैली भी दयनीय हो गयी है, घरों में केद है, उनकी उपभोग, उत्पादन विनिमय वितरण सभी आर्थिक क्रियाओं पर दुष्प्रभाव पड़ा है। सरकार के राजस्व में भारी कमी आई है। समग्र रूप से आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, सभी दृष्टि से महामारी से मनुष्य को बुरी तरह प्रभावित किया है।

यदि विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का सकाल घरेलू उत्पाद में योगदान देखे तो ज्ञात होता है कि 1990 के बाद से विश्व की उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को योगदान लगातार कम हुआ है यूरोपियन संघ, यूरोजोन, जापान, जर्मनी एवं यूके जैसे विकसित देशों के योगदान में लगातार कमी आई है वही चीन जिसका सकल घरेलु उत्पाद में 1990 में 1–8 प्रतिशत योगदान था आश्चर्यजनिक रूप से लगातार वृद्धि कर 2019 में 16–3 प्रतिशत हो गयी है। वही महाशक्ति अमेरिका के योगदान में उतार–चढाव देखने को मिलता है। 2019 में सर्वाधिक 24 प्रतिशत योगदान अम्रीका का है जो विश्व में नंबर 1 पर है तथा चीन का 16 प्रतिशत, जापान का 16 प्रतिशत एवं यूरोजोन का 15 प्रतिशत योगदान है। विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का सकल घरेलु उत्पाद में योगदान तालिका 2 में दर्शाया गया है।

तालिका 2: विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का सकल घरेलु उत्पाद में योगदान एवं भारत की स्थिति (प्रतिशत में)

क्र.	विश्व एवं देश	1980	1990	2000	2005	2010	2015	2019
1.	उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	46.2	79.7	79.7	76.1	65.8	60.5	59.7
2.	टमेरिका	26.0	26.1	30.9	27.7	23.1	24.3	24.7
3.	यूरोपीय संघ	34.1	31.7	26.4	30.2	25.8	27.9	21.1
4.	युरोजोन	–		19.4	22.3	19.3	15.6	15.3
5.	युके	5.1	4.6	4.6	5.0	3.6	3.8	3.1
6.	जर्मनी	7.7	7.0	5.9	6.1	5.2	4.5	4.4
7.	जपान	10.0	13.8	14.5	10.0	8.7	5.8	5.9
8.	ब्राजील	1.5	2.3	2.0	2.0	3.3	2.4	2.1
9.	रूस	–		0.8	1.7	2.4	1.8	1.9
10.	भारत	1.7	1.5	1.5	1.8	2.6	2.8	3.3
11.	चेन	1.9	1.8	3.7	5.0	9.3	15.0	16.3
12.	दक्षिण अफ्रीका	0.8	0.5	0.4	0.5	0.6	0.4	0.4

स्त्रोतः आईएमएफ, वर्ल्ड इकानामिक आउटलुक डाटाबेस अक्टूबर 2019 (आर्थिक समीक्षा 2011–12, सारणी 14.2 पृष्ठ क्रमांक 340, आर्थिक समीक्षा 2019–20, पृष्ठ क्रमांक 4)

तालिका 2 से स्पष्ट है कि विश्व GDP योगदान में दूसरा स्थान रखने वाला चीन अपनी अर्थव्यवस्था का मजबूत कर प्रथम आर्थिक महाशक्ति बनाने तथा अम्रीका को कमजोर करने के लिए संभावतः जैविक हतियार के रूप में मानव निरयित कोविड–19 वायरस का उपयोग किया है। क्यूंकि कोविड–19 वायरस कि शुरूआत चीन के बुहान शहर से हुई और ऐसाा माना जा रहा है कि वही कि लैब से ये वायरस लीक हुआ है। कोविड–19 महामारी के प्रभाव से इन देशों के योगदान में भी अंतर आयेगा मुख्य रूप से यूरोपियन देशों एवं अमेरिका के योगदान पर ऋणात्मक प्रभाव आयेगा।

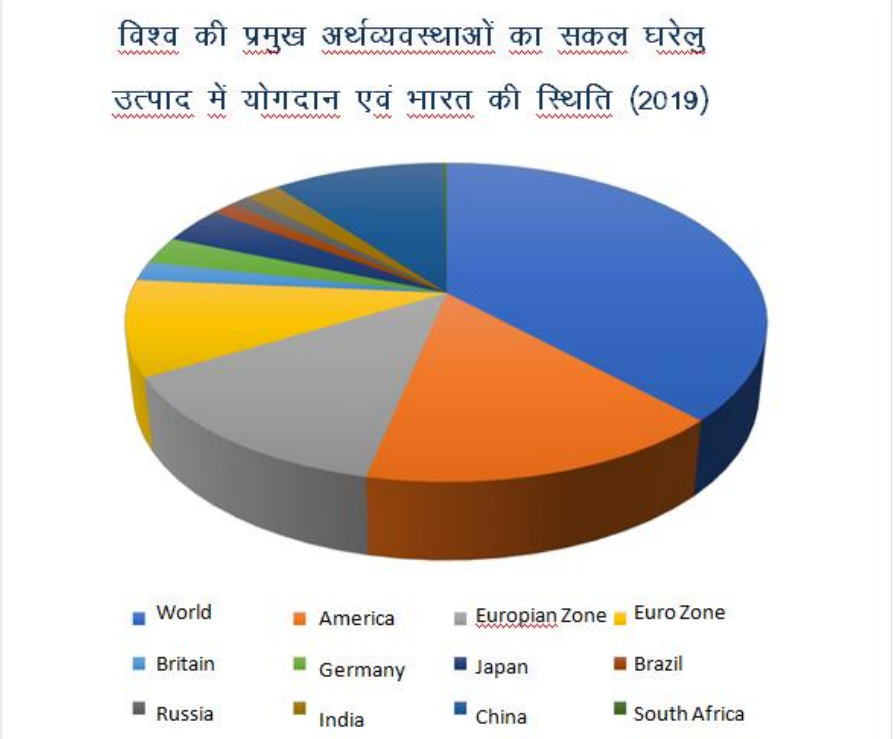

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अनुसार –''हम बुरे दौर से गुजर रहे हैं।'' अर्थव्यवस्था को 10 लाख करोड़ रूपए का नुकसान तथा 1.5 करोड़ रोजगार की कमी भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी के गर्त में पहुंचा सकती है। भारत में से 67000 से अधिक संक्रमित तथा 2200 से अधिक मृत्यु हो चुकी है। विश्वस्वास्थ्य संगठन के अनुसार यदि वैक्सीन नहीं निकलता तो विश्व की 70 प्रतिशत जनसंख्या कोरोना से ग्रसित हो जाएगी। भारत की 75 प्रतिशत वर्कफोर्स जो स्वरोजगार एवं कैसुअल वर्कर्स हैं, उनपर सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। 400 मिलियन संगठित एवं अनोपचारिक क्षेत्र में कार्यारित जनसंख्या अत्यधिक प्रभावित हुई है। 14 करोड़ मजदूर पलायन के कारण दयनीय स्थिति में है उनके खाधान्न एवं रोजगार की समस्या भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मुहबाए खड़ी है। 3.0 लॉकडाउन के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था को 234 अरब अमेरिकी डॉलर के नुकसान का अनुमान है कोविड–19 के प्रभाव को दो तरह से देखा जा सकता है–

प्रतिकूल प्रभाव

उधोग जो हानि में जाएंगे– ऑटोमोबाइल, पर्यटन, एयर–सर्विसेज, टूर ओपेरटर, हॉस्पिटैलिटी, होटल, रेस्टोरेन्ट, टेक्सटाइल, रियल–एस्टेट, एविएशन, सिनेमा, ओला, उबेर इत्यादि।

अनुकूल प्रभाव

ऑनलाइन शॉपिंग बिलनस कम्पनी जैसे–अमेजन, अलीबाबा, फिलपकार्ट इत्यादि। सोशल मीडिया कम्पनी– फेसबुक, टिकटोक, व्हाट्सएप, इन्स्टाग्राम इत्यादि। जीवन जीने के लिए जरूरी – अनाज, सब्जियाँ इत्यादि कोरोना केयर – मास्क, सेनेटिजेर, हैण्ड वॉशर, दवाईयाँ इत्यादि। भारत में अभी सात हजार करोड़ की इंडस्ट्री PPE किट्स उत्पादन की विकसित हुई है।

निष्कर्ष एवं चुनौतियाँ

वर्तमान में 302 ट्रिलियन की भारतीय अर्थव्यवस्था जो 7.5 प्रतिशत औसत वार्षिक विकास दर से बढ़ रही थी अचानक कोविड–19 महामारी से संकट की स्थिति में पहुँच गयी है। विश्व बैंक, अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, एशिआई विकास बैंक, मुडीस, आदि संस्थाओं ने भारत की विकास दर की गिरावट का संकट दर्शाया है। कोविड–19 ने पूरी अर्थव्यवस्था उपभोग,उत्पादन, विनिमय, राजस्व, उधोग, व्यापार, जीवनशैली, यहाँ, तक की मनुष्य की सामाजिक, आार्थिक एवं मानकसिक स्थिति की बुरी तरह प्रभावित किया है। वास्तव में उपभोक्ता में कमी, मांग में कमी , सप्लाई चेन की समस्या, उत्पादन में कमी, रोजगार की कमी, प्रतिव्यक्ति आय में कमी, व्यापार व्यवसाय पर प्रतिकूल प्रभाव, विदेशी मुद्रा कोष में कमी, मजदूरों के पलायन की समस्या, कोरोना से बचाव, स्वास्थ्य की चुनौती इत्यादि ऐसी चुनौतिया है जिनसे हमें निपटना होगा। हमें ऐसे कारगर समाधान करने होंगे की इस वैश्विक महामारी से उत्पन्न समस्याओं को दूर कर सके। कोविड–19 के वैक्सीन के निर्माण, कोरोना की कारगर दवाई, स्पेशल विस्तेन्सिंग, मास्क, सेनेटिजेर, हैण्डवॉशर इत्यादि कोरोना केयर को अपनाना, स्वदेशी को बढ़ावा देना, लघु एवं कुटीर उधोगों को बढ़ावा देना, गाँव में संरचनात्मक विकास एवं रोजगार को बढ़ावा, मनुष्य को सात्विक, मितव्ययी संपोषित जीवन पद्धति को अपनाना, गाँधीवादी आर्थिक मॉडल को अपनाना इत्यादि उपायों के द्वारा अर्थव्यवस्था को गति देना होगी तभी भारतीय अर्थव्यवस्था इस संकट से उभर पाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र एवं पूरी–भारतीय अर्थव्यवस्था 2018, हिमालया पब्लिशिंप हाउस, मुम्बई पृ.क्र,76 से 87
2. Shankar acharya and Rakesh Mohan- India's Economy performance and challenge (Delhi 2010) P.340
3. Reserve Bank of India, Handbook of Statistics on the Indian Economy 2018-19
4. लॉकडाउन बड़ने से भारतीय अर्थव्यवस्था को कितना होगा नुकसान अमर उजाला पी,टी, आई, दिल्ली,14 अप्रैल 2020.

5. IMF world economic outlook 2019.
6. Arun M.Kumar (CEO of KPMG)- Potential impact of covid-19 on the Indian economy- April, 2020
7. डॉ. कमल भारद्वाज–'कोरोना संकट और विश्व अर्थव्यवस्था' सम्पादकीय मेरीफलम 2 अप्रैल 2020 समाचार पत्र राष्ट्रीय नवाचार
8. डॉ. भरत झुनझुनवाला , विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ाव कम होने से कोरोना वायरस से भारत की अर्थव्यवस्था को कम होगा आर्थिक नुकसान, जागरण 25 मार्च 2020.
9. World economic outlook report 14th May 2020.
10. भारत दुनिया की पांचवी, बड़ी अर्थव्यवस्था – IMF, BBC News, 19 Dec 2018.
11. 'ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ भारत बना दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जागरण –May 18, 2020.
12. Poverty reduction in India: revisiting past debates with 60 years of data Gaurav Datt, Martin Ravallon, Rinku Murgai, 26 March 2016.
13. विश्व का भविष्य विकासशील देशों पर निर्भर, वैश्विक रूझान 2030– वैकल्पिक दुनिया, अमेरिकी की राष्ट्रीय खुफिया परिषद द्वारा जारी रिपोर्ट–11 दिसम्बर 2012.
14. https://www.indianbudget.nic.in
15. https://www.wordbank.org
16. https://www.data.gov.in

❖◆❖